डॉ.राजेश श्रीवास्तव राज

गीत

कल ही राखी डाक मिली है.

कल ही राखी डाक मिली है क्या तुम घर ना आओगी।
समझ रहा मै बहन विवशता दूर से क्या समझाओगी ।।

याद है बचपन के सारे दिन तैयारी भोर कराते थे।
राखी और मिठाई अक्षत थाली एक सजाते थे।।
बांध के राखी लड़ हम जाते यह बाते कहाँ भुलाओगी।
कल ही राखी डाक मिली है क्या तुम घर ना आओगी।१।

दूरी ने कर दी मजबूरी यादें बहुत सताती हैं।
राखी वाली भरी कलाई खुशियां हमें हंसाती हैं।।
फोटो खींचुंगा भेजूंगा क्या सबको दिखलाओगी।
कल ही राखी डाक मिली है क्या तुम घर ना आओगी।२।

नेह का बँधन ना टूटे यह रीत निभाते हम मिलकर।
मन की दूरी ना हो पाए सीख दिखाएं हम मिलकर।।
अगली राखी निश्चित आना या यूं ही तरसाओगी।
कल ही राखी डाक मिली है क्या तुम घर ना आओगी।३।

पिया के घर में खुश तो होना जल्दी मिलने आऊंगा।
गुस्सा गुस्सी चला करेगा रूठो वहीं मनाऊंगा।।
राखी केवल डोर नहीं है जग को सत बतलाओगी।
कल ही राखी डाक मिली है क्या तुम घर ना आओगी।४।

बँटवारा ग़र चाह रहे हो....

थोड़ा ठहरो सोच समझ लो,करो ना यूं ही मनमानी।
बँटवारा ग़र चाह रहे हो, क्या–क्या इसमें बाँटोगे।।

दीवारें चौखट को बांटो,शीशम के दरवाजे भी।
बाबूजी का धरा रेडियो,और पुराने बाजे भी।।
जिस खटिया पर हम तुम लेटे,उसको भी क्या काटोगे।
बँटवारा ग़र चाह रहे हो,क्या–क्या इसमें बाँटोगे।१।

एल्बम वाली धुंधली फोटो,बचपन खेली गुड़िया भी।
जो स्कूल में चूरन खाते,क्या अब उसकी पुड़िया भी।।
माँ बाबू की याद है सिमटी,हाँ दूरी कैसे पाटोगे।
बँटवारा ग़र चाह रहे हो,क्या–क्या इसमें बाँटोगे।२।

चरखी बल्ला पतँग पुरानी,क्यों बचपन बिसराते हो।
थोड़े में क्या करें गुजारा,क्यों मन को भरमाते हो।।
बिछड़ गए जो सुख दुख के पल,उनको कैसे छाँटोगे।
बँटवारा ग़र चाह रहे हो, क्या–क्या इसमें बाँटोगे।३।

कोने वाली खिड़की देखो,जिससे सूरज झांक रहा।
आंगन वाला जामुन केला,रूठी आंखें ताक रहा।।
जिसको अब तक गोद खिलाया,उसको कैसे डाँटोगे।
बँटवारा ग़र चाह रहे हो,क्या–क्या इसमें बाँटोगे।४।